Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)
ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX, Issue - I,
January - March - 2020
HINDI PART - I

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Ajanta
Prakashan

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX Issue - I January - March - 2020

HINDI PART - I

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	शोधालेख एवं शोधकर्ता	पृष्ठ क्र.
१	प्रयोजनमूलक हिंदी और अनुवाद क्षेत्र **डॉ. गायत्री मिश्रा**	१-८
२	रोजगारोन्मुख हिंदी (विशेष संदर्भ - अनुवाद का क्षेत्र) **डॉ. सतीश यादव**	९-१३
३	प्रयोजनमूलक हिंदी की विशेषता और स्वरूप **डॉ. एस. सी. अंगडि**	१४-१७
४	अनुवाद क्षेत्र **डॉ. अफशाँ बेगम अहमदअली, देशमुख**	१८-२५
५	रोजगारोन्मुख हिंदी **डॉ. ललिता राठोड**	२६-३०
६	विज्ञापन क्षेत्र **कुशलदास साहू**	३१-३४
७	एक आश्वस्थ सफलता: विज्ञापन **डॉ. नानासाहेब श. गायकवाड**	३५-३८
८	दूरदर्शन के क्षेत्र में हिन्दी **डॉ. बायजा कोटुळे**	३९-४१
९	रोजगार की सभावनाएँ **डॉ. मंत्री आर. आडे**	४२-४९
१०	संगणक और हिन्दी **माहेश्वरी**	५०-५४
११	अनुवाद क्षेत्र और हिंदी **प्रा. प्रमोद किशनराव घन**	५५-५६
१२	रोजगारोन्मुख हिन्दी **डॉ. राजश्री दगडू भामरे**	५७-६०
१३	प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रुप **राधा आत्माराम राठोड**	६१-६४

VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

११. अनुवाद क्षेत्र और हिंदी

प्रा. प्रमोद किशनराव घन
हिंदी विभाग प्रमुख, तोष्णीवाल कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सेनगांव ।

प्रयोजनमूलक हिंदी के अंगो में अनुवाद प्रकिया का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। जब प्रयोजनमूलक हिंदी की बात आती है तो उसमें अनुवाद, संरचना आधारभूत तत्व के रूप में मानी जाती है, ज्ञान–विज्ञान, प्रशासन, प्राद्योगिकी पाश्चिमि भाषा की देन है। अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, जर्मनी तथा जपानी भाषाओं में जो भी अनुसंधान की बाते हुई उन सब ग्रंथो के अनुवाद की अनिवार्यता आवश्यक लगी। तकनिकी तथा वैज्ञानिक शब्दावली को हिंदी भाषा में लाने हेतू भारत मे अनुवाद की प्रकिया तेजी से आ गई। मनुष्य की सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक जरूरत के साथ कार्यालयीन कामकाज की अत्यावश्यक शर्त अनुवाद बन गई। एक देश से दूसरे देश के विचारों के आदान–प्रदान हेतू तथा सामुहिक संबंध हेतू यह कड़ी अधीक मजबूत हो गई, अनुवाद का प्रयोजन वैज्ञानिक युग में संकुचित न रहते हुए बहु आयामी बन गया। अनुवाद प्रकिया को हम भाषाविज्ञान से जोड़ते है, कुछ लोग इसे कला भी मानते है। प्रसिध्द कवि एजरा पाऊण्ड ने तो अनुवाद को 'साहित्यिक पुनर्जीवन' माना है। कुछ विद्वान अनुवाद को विज्ञान मानते है तो कुछ विद्वान अनुवाद को कौशल मानते है। आधुनिक युग में जीवन के अनेक क्षेत्रों की समृध्दि के साथ भाषा तथा संस्कृति के संस्कार वृध्दि के लिए अनुवाद एक अनिवार्य आवश्यकता के रूप में उभरकर सामने आया है। अनुवाद केवल एक प्रकिया या रूपांतरण का माध्यम ही नही बल्की वह एक अर्जीत कला है। अनुवाद कला समन्वय की कला है, अनुवाद आलगाव तथा विज्ञान का विध्वंस नही बल्कि एकता और नवनिर्माण का विज्ञान है।

अनुवाद (Translation) शब्द संस्कृत का है जिसके मूल में 'वद' धातु है 'वद' से तात्पर्य है बोलना या बात करना। 'वद' धातु में 'धत्र' प्रत्यय जुड़ने से 'वाद' शब्द बना तथा 'अनु' उपसर्ग लगने से अनुवाद शब्द बना है। कोश के अनुसार अनुवाद का अर्थ है– 'पहले कहे गये अर्थ को फिर से कहना' प्रसिध्द भाषाविद् न्यूमार्क ने अनुवाद की परिभाषा देते हुए लिखा है – ''अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में लिखित संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा में उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है।'' दूसरे विद्वान ए.एच.स्मिथ के अनुसार 'अर्थ को बनाये रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण करना अनुवाद है।'' हिंदी में अनुवाद के लिए भाषान्तर, भाषानुवाद, टीका, रूपान्तरण तथा तर्जुमा कहा जाता है, इन सभी शब्दों में अनुवाद शब्द हमें थोडा युक्तिसंगत लगता है। अनुवाद में मूल बात अथवा विषयवस्तु के कथ्य तथा उद्देश्य की पूरी रक्षा की जाती है फिर उस मूल या स्त्रोत भाषा में व्यक्त विचारों, भावों को सहज रूप से लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति प्रदान की जाती है।

अनुवाद के लिए अभ्यास, अनुशीलन, अध्ययन तथा कार्यकुशलता की आवश्यकता है। अनुवादक को दोनों भाषाओं के स्वरूप तथा मूल प्रकृति एवं प्रवृतियों का गहन अध्ययन अवश्यक होता है केवल शब्द–वाक्यांश अथवा पदावली का अर्थ भर लिख देना अनुवाद नही होता। अनुवादक की भूमिका केंद्रवर्ती भूमिका है, अनुवादक को अपना दृष्टिकोण वैज्ञानिक रखना पड़ता है। अनुवादक को भाषाओं का समुचित ज्ञान आवश्यक है। अनुवादक को विषय का समग्र ज्ञान होना जरूरी है। उदाहरण के तौर पर बैंकिंग क्षेत्र के ज्ञान का अभाव होनेवाला व्यक्ति सेक्युरिटी को

सुरक्षा ही कहेगा लेकिन बैंक की जानकारीवाला व्यक्ति इसे प्रतिभूति लिखेगा। भाषाई स्तरपर विश्वभर में विवि शैलियाँ प्रचलित है जैसे व्यास, समास, व्यंजक, सामान्य, उत्तम, लाक्षणिक, अलंकृत, मुहावरेदार तथा सरल श्रे आदि। किसी भी शैली में छंद, ध्वनि, अलंकार तथा शब्द शक्तियों को अनुवाद के रूप में स्थापित करना क कठीन काम है, अनुवाद में पाठक की श्रेणी का भी ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

अनुवाद के प्रकार कुछ विचारवंतो ने गद्य–पद्य के आधारपर, साहित्यिक विधा के आधारपर, विषय आधारपर तथा अनुवाद प्रकृति के आधारपर किये है। उनमें से महत्वपूर्ण तथा बहुप्रचलित अनुवादों में शब्दानु महत्वपूर्ण है। इस अनुवाद को उच्च कोटि का अनुवाद तो नही कहेंगे किन्तु कभी कभी शब्दानुवाद करना ज होता है। जैसे अंग्रेजी का शब्द Pay जिसका शब्दानुवाद भुगतान अथवा वेतन होगा किन्तु बैंकिंग क्षेत्र में भुग करे, वेतन करे से उलझने पैदा होती है। इसलिए Pay शब्द ही उचित लगता है। भावानुवाद को अनुवाद क्षे शब्दानुवाद के समान शब्द, वाक्य या वाक्यांश पर ध्यान न देते हुए स्त्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा के मूल अर्थ, वि और भावाभिव्यक्ति को अधिक महत्व दिया जाता है। इसमें मूल कथ्य को लक्ष्य भाषा में यथायोग्य संप्रेषित जाता है। डॉ. भोलानाथ तिवारी इस संदर्भ में कहते है– "सामान्यतः मूल सामग्री यदी सुक्ष्म भावोंवाली है तो उ भावानुवाद करते है और यदी वह तथ्यात्मक, वैज्ञानिक, या विचार प्रधान है तो इसका शब्दानुवाद करते छायानुवाद में मूलपाठ की अर्थछाया को ग्रहण कर अनुवाद किया जाता है अर्थात स्त्रोतभाषा की मुख्य दृष्टिकोण, विचार और संकल्पना आदि को ग्रहण करके इन सबके संकलित प्रभाव को लक्ष्य भाषा में रूपान्त किया जाता है।

व्याख्यानुवाद में व्याख्या स्वाभाविक रूप से अनुवादक के व्यक्तित्व तथा चिंतन प्रणाली पर आधारित है। अनुवादक अपनी शैली के अनुसार उसे विस्तारित या रूपायित करता है। सारानुवाद में 'लंबी रचनाओं, भाषणों तथा राजनैतिक वार्ताओं को उसके कथ्य तथा मूलतत्व को पूर्णतः सूरक्षित रखते हुए आवश्यकतानुसार स में रूपान्तरित करने की प्रक्रिया को सारानुवाद कहते है। आशु अनुवाद में सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनै आदान–प्रदान हेतू अत्याधिक महत्व प्राप्त हो गया है, जब भिन्न भाषा भाषी महत्वपूर्ण बातचित करते है तो उ भाव तथा विचारों को एक दूसरे को संप्रेशित करने के लिए महत्व की भूमिका दुभाषियाँ करता है। दुभाषियाँ दोनों भाषाओं की सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रवृत्तियों को ध्यान में रखना जरूरी है। आदर्श अनुवाद में अनुवा मूलपाठ की मूलसामग्री का अनुवाद अर्थ तथा अभिव्यक्ति सहित लक्ष्य भाषा में निकटतम एवं स्वाभाविक समान व्दारा करता है। स्पष्ट रूप में आदर्श अनुवादक इस में व्यक्तित्व तथा व्यक्तिगत चिंतन नही आने देता। रूपान्त से तात्पर्य है रूप को बदलना इस में अनुवादक किसी विधा का रूप बदलकर उसे दूसरी विधा में परिवर्तीत क है। इस प्रकार प्रयोजनमूलक हिंदी में अनुवाद प्रक्रिया का अनन्यसाधारण महत्व है।

संदर्भ

1. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिध्दांत और प्रयोग – दंगल झाल्टे
2. प्रयोजनमूलक हिंदी : डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय
3. राजभाषा तथा प्रयोजनमूलक हिंदीः डॉ. शंकर रा. पजई